International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 09-06-2026, Accepted: 09-07-2026, Published: 24-07-2026
Volume 8, Issue 3, 2026, Page No. 8-10

भवानी प्रसाद मिश्र के काव्य की 21वीं सदी में प्रासंगिकता

डॉ. प्रणव शर्मा
हेमचंद यादव विश्वविद्यालय, दुर्ग, छत्तीसगढ़, भारत

सारांश
21वीं सदी में संचार क्रांति के कारण साहित्य के क्षेत्र में भी बड़ा परिवर्तन आया है। आज डिजिटल मीडिया के समय में लोगों में श्रव्य–दृश्य माध्यमों का प्रचलन अधिक है। एक स्तर पर साहित्य डिजिटल रूप में भी पढ़ा और सुना जाने लगा है। कविता या साहित्य आज नए रूपों में उपलब्ध है। पूर्व के कई साहित्य और साहित्यकर भी आज के समय में प्रासंगिक बने हुए हैं। कवि भवानी प्रसाद मिश्र हिंदी कविता के संसार में एक बड़ा नाम हैं। उन्होंने अपनी बोलचाल की भाषा में गहरे से गहरे संवेदनाओं और नए विचारों को शब्दबद्ध किया है। प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से भवानी प्रसाद मिश्र की कविताओं का 21वीं सदी में प्रासंगिकता पर दृष्टिपात करने का प्रयास है।

मूल शब्दः आस्तिक, नास्तिक, दर्शन, ईश्वर, अभ्यास, वैराग्य

प्रासंगिकता शब्द का उपयोग अर्थवत्ता, उपादेयता, अनुकूलता, सुसंगतता और महत्ता जैसे विभिन्न अर्थो में होता है। हर नया युग नये सिद्धांतो और मूल्यों को जन्म देता है जिससे पूर्व के प्रचलित विचार या मूल्य अप्रासंगिक हो जाते हैं। समय के साथ युगीन परिस्थितियां भी परिवर्तित होती हैं। और परिस्थितियों का प्रभाव जन–जीवन पर पड़ता है। 21वीं सदी विज्ञान और तकनीकी उत्कर्ष की सदी रही है। विज्ञान ने मानव सभ्यता के विकास में बहुत बड़ा परिवर्तन किया है। जिसके अच्छे और बुरे दोनों परिणाम हुए हैं। इस सदी के प्रारम्भ में ही जिन विचार या सिद्धांतों का प्रचलन था आज उनका प्रासंगिक होना जरुरी नहीं है।

प्रासंगिकता का सीधे अर्थ किसी एक सदी या समय के सिद्धांत या विचारों का दूसरे युग या समय में कितना उपादेय या महत्व है से लिया जा सकता है। समाज तेजी से परिवर्तन के दौर से गुजरा है। परिवर्तन के इस दौर में कोई साहित्य कितना प्रासंगिक रह पाता है इसे देखने के लिए पहला बिंदु साहित्य के संवेदनशील होने से लिया जा सकता है। उनमे मानवीय संवेदना का होना उसके आने वाली सदियों में भी प्रासंगिक बने रहने को दृढ करता है। इसका उदाहरण भक्तिकाल के काव्यों में देखा जा सकता है। भक्तिकाल के तुलसी, कबीर और नानक आदि जैसे संत कवियों की रचनाएं मानवीय संवेदनाओं से स्पन्दित है।

प्रासंगिकता का दूसरा बिंदु साहित्य के प्रगतिशील होने का है। प्रगतिशीलता का अर्थ समसामयिक समय की रूढ़ीवादिता को तोड़ कर नये वैचारिक आयाम का प्रतिपादन करने से है। ऐसे वैचारिक आयाम जो आने वाले कई पीढ़ी के लिए और समाज के विकास के लिए सहायक हो। साहित्य अपने समय से जितना प्रगतिशील होगा उसमे प्रासंगिकता के आयाम उतने ही होंगे। प्रगतिशील साहित्य अपने समय से बढ़कर वैचारिक स्तर पर संघर्ष करता है। तभी एक सदी से दूसरी सदी में उसकी प्रासंगिकता बनी रहती है। ऐसी ही प्रगतिशीलता संतो में कबीर, आधुनिक काल में प्रेमचंद, निराला और मुक्तिबोध जैसे साहित्यकारों की रचनाओं में मिलती है।

साहित्य यर्थाथ के जितना करीब होता है उसकी प्रासंगिकता उतनी ही अधिक होती है। साहित्य समाज के दर्पण होने के साथ समाज में अपना हस्तक्षेप रखता है। वह समाज को दिशा देता है। यही साहित्य के प्रासंगिकता का तीसरा बिंदु है। समाज में जहां सुधार की आवश्यकता है वह उस ओर मार्गदर्शन करता है। साहित्य की यह जिम्मेदारी बनती है कि वह समाज को कोरे आदर्शों की अपेक्षा यर्थाथ की ओर ले जाए। आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक कभी न कभी ऐसे साहित्य की रचना हुई है जिसका मुख्य लक्ष्य समाज को सही मार्ग में ले जाना रहा है। और ऐसे साहित्य एक सदी से दूसरे सदी तक प्रासंगिक बने रहने का गुण रखते हैं।

भवानी प्रसाद मिश्र की काव्य यात्रा तब आरम्भ हुई थी जब भारत में ब्रिटिश शासन था। चारों ओर ब्रिटिश शासन के शोषण का कुचक्र चल रहा था। देश की स्वतंत्रता के लिए आन्दोलन हो रहे थे। भवानी प्रसाद मिश्र के बालमन में राष्ट्रप्रेम के विचार चलने लगे थे। किशोरावस्था से ही वे विभिन्न आंदोलनों में भाग लेने लगे थे। प्रारम्भ की बहुत सी कविताएं राष्ट्रप्रेम या प्रकृति प्रेम की कविताएं हैं। राष्ट्रप्रेम से भरी–पूरी उनकी कविताएं लोगों में जोश भर देने का गुण रखती हैं। परतंत्र भारत में आम जनता हो या किसान सबकी स्थिति बड़ी दयनीय थी। बड़े जमींदार ब्रिटिशों के लिए काम करते और आम लोगों का शोषण करते। भवानी प्रसाद मिश्र किसानों की स्थिति देखकर अपनी लेखनी को किसानों की वाणी बन जाने की बात कही है –

"मेरे अंतर की ज्वाला को,
जग तेरी बूंदों में पाए,
तू उसको कागज पर उतार,
जो मेरे जी पर चढ़ जाए
मैं कृषकों का बोल बनूँ प्रेयसि,
तू उनकी वाणी बन,
मैं सत्य रहूँ, तू सुंदर हो,
मैं शिव, तू माँ कल्याणी बन।[1]"

स्वतंत्रता के बाद किसानों की स्थिति में कोई बड़ा परिवर्तन नहीं आया। हालांकि किसान आन्दोलन पर उतर आया। लेकिन उसकी आवाज लोकतांत्रिक सरकार तक पहुंचने में असमर्थ है। आवाज पहुंचती भी है तो किसानों को भुलावे के पत्र दे दिए जाते हैं। ऐसे में आज भी भवानी प्रसाद मिश्र की कविता प्रासंगिक दिखती है। मिश्र मानवता के कवि हैं। उनके कवि मन में समाज के सभी वर्गों के लिए हृदय से प्रेम छलकता है। पूंजीवादी व्यवस्था में अमीर और अमीर होता गया तो गरीब और गरीब होता गया है। एक सामान्य जीवन जीने के लिए भी कड़ा संघर्ष करना पड़ता है। कवि की वाणी ऐसे में गरीबों की वाणी बन कर बोलती है –

"मेरी बोली का गर्व
सदा से ही गरीब की वाणी है।
मेरी स्याही रूप का सदा ही से
आँखों का पानी है।"[2]

भारतीय संस्कृति में हमेशा से ही प्रकृति का बड़ा महत्व रहा है। प्रकृति को दैव्य रूप तक माना गया है। लेकिन 21वीं सदी में मानव प्रकृति से दूर हुआ है। यह अलगाव प्रकृति और मनुष्य दोनों के लिए दुश्कर रहा है। औधोगिकीकरण और शहरीकरण ने प्रकृति को बड़े पैमाने पर नुकसान पहुंचाया है। वातावरण पहले से अधिक दूशित हो गया है। धड़ले से वन काटे जा रहे हैं। वनों के कम होने से वर्षा के चक्र पर प्रभाव पड़ता है। भूमंडलीय उष्मीकरण की समस्या साल दर साल बढ़ती जा रही है। भवानी प्रसाद मिश्र ने यह सब देखकर सन् 1976 में ही कविता लिखी थी –

"हम प्रकृति से टूट गये हैं
जिस डाली को पकड़े थे हमारे हाथ
उससे हमारे हाथ छूट गये हैं
और अब हम एक गति मे हैं
ज्यादातर लोग समझ रहे हैं
हम प्रगति में हैं।
आवाज से तेजतर उड्डयन हमें
किसी खड्ड में ले जाने वाला
पतन नहीं लग रहा है
अजीब एक महत्व का आभास
हमें ठग रहा है।[3]"

21वीं सदी में समाज बहुत सारी विशमताओं से भरा हुआ है। प्रगति के रास्ते में समाज जैसे–जैसे आगे बढ़ा है भौतिकवादी होता गया है। मूल्यों का ह्रास हुआ है। इस पर भवानी प्रसाद मिश्र की 'गीत–फ़रोश' की पंक्ति 'जी, लोगों ने बेच तो दिये ईमान' प्रासंगिक है। आज के समाज में नैतिकता का अवमूल्यन हुआ है। मानव ही मानव का नष्ट करने में लगा हुआ है। मानवता का स्तर भी धीरे–धीरे घट रहा है। कवि अपनी कविताओं में यह सभी बातें सन् 1976 की कविता 'लोग जो नहीं चाहते' में लिखते हैं। आज का आदमी किन धुरियों पर जी रहा ऐसे चिंता हैं उनकी कविता में दिखती है –

"यह प्रजातंत्र है आदमी में व्यक्तिमता
जगाने का मन्त्र है इसे देख सुन समझकर
आदमी आपे में आता है
वह समाज को पूरी तरह भूल जाता है
अपने लिए कारखाने खोलता है
दवाइयों में जहर घोलता है
अंबार लगाता है अपने लिए पैसे के।"[4]

उपरोक्त कविता आज 21वीं सदी में पहले से अधिक प्रभावी मालूम पड़ती है। एक ही कविता में आदमी, समाज, प्रजातंत्र की स्थिति को मिश्र ने यथार्थ के चिमटे से पकड़ा है। दुराचार, व्यभिचार, भ्रष्टाचार, स्वार्थ, मोह, लोभ जैसे अवगुण समाज को खोखले करने में लगे हुए हैं। जनता और पद आसीन सरकार के बीच दूरियां है। जनता को अपनी बात रखने की जगह नहीं दी जाती। ऊँचे पदों पर बैठे लोग अपनी स्वार्थपरता में लगे हुए हैं–

"आओ इसे समझो और
देखो और चक्कर खाओ
याने यहां गाओ प्रजातंत्र को
वहां समाजवाद को भूलो वह सारा
जो सचमुच था तुम्हारा"।[5]

कवि भवानी प्रसाद मिश्र ने अहिंसा और प्रेम को सबसे पहले रखा है। कवि को युद्धों के सारे उपक्रम मनुष्य जाति को नुकसान पहुँचाने वाले लगते हैं। युद्ध में जीत भले ही एक पक्ष की हो लेकिन उसका दूरदर्शी परिणाम सामान्य जनता को हानि के रूप में ही होता है। शिक्षा और स्वास्थ्य के बजटों से भी ज्यादा सेना के बजट पर ध्यान दिया जाता है। ऐसे में एक नहीं सभी के लिए अहिंसा का मार्ग ही उपयुक्त मालूम पड़ता है। कवि के अनुसार लगता है हुक्मरानों के लिए अहिंसा का मार्ग बहुत दूर है। वे तो बड़े पदों में बैठ कर हुक्म चलाना जानते हैं। यदि वह अहिंसा का मार्ग चुन भी ले तो स्थिति कैसी होगी इस पर विचार करते मिश्र की कविता 'सवाल यह है' कहती है –

"वे शांति पर नहीं उतर सकते
यह साफ बात है
क्योंकि बुद्धजीवी और मांसजीवी
और सेना उनके साथ है
वे क्या उतर कर शांति के बजरे पर
इस बेड़े को गर्क होने दें
या बढ़ने के बजाय
इस बेड़े पर उतर कर उससे
उसे बंजर किसी तट से बांध दें।"[6]

कवि भवानी प्रसाद जी ने एक मध्यमवर्गीय जीवन जिया है। संवेदनशील मध्यमवर्गीय आदमी को ऊपर निचे सभी वर्ग की बातें खुले किताबों की तरह दिखती हैं। मिश्र ने रोजमर्रा के जीवन संघर्ष को देखा और जिया है। जीवन में आज दौड़–भाग पहले से अधिक है। लोगों के लिए रुपए–पैसे का महत्व बढ़ता जा रहा है। आदमी के हर कदम जैसे और अधिक पैसे कमा लेने की महत्वाकांक्षा को ही बढ़ते हैं। मिश्र जीवन के कवि हैं जिन्होंने जीवन को भरपूर जिया है। जीवन के थपेड़ो का अनुभव का बयान भवानी प्रसाद मिश्रकी कविता 'जिंदगी' इस प्रकार करती है–

"जिंदगी शोरगुल हो गई है
दो पैसे से दस पैसे तक पहुंचने का
पुल हो गई है और लोग इस पुल पर से
यों गुजरते हुए कि दो के दस कैसे हो जाएं
न दाहिने देखते हैं न बाएं"।[7]

जीवन की दौड़–भाग को ही देखकर कवि ने 'आराम से भाई जिंदगी' में लिखा है –

"आराम से भाई जिंदगी जरा आराम से
तेजी तुम्हारे प्यार की बर्दाश्त नहीं होती अब
इतना कसकर किया गया आलिंगन
जरा ज्यादा है जर्जर इस शरीर को"।[8]

निष्कर्ष

भवानी प्रसाद मिश्र की कविताओं में प्रकृति, समाज, समाज में रहने वाले आम लोग और राष्ट्र आदि सभी का चित्रण है। उन्हें भविष्य द्रष्टा कवि कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी। उनकी कविताओं में 21वीं सदी में भी प्रासंगिक रहने के सभी लक्षण विद्यमान हैं। उनके कविताओं में उन सभी विषयों का समावेश है जो उनके समय तो महत्व रखते थे साथ ही आज के समय में भी अपना महत्व बनाए हुए हैं। उनकी कविताओं में निहित भाव

और विचार आज भी यर्थाथ के पटल में सही प्रतीत होते हैं। भवानी प्रसाद मिश्र आधुनिक युग के ऐसे कवियों में हैं जिनके काव्यों की प्रासंगिकता 21वीं सदी में भी बराबर बनी हुई है।

सन्दर्भ सुची

1. गीत–फ़रोश, पृष्ठ सं. 31, भवानी प्रसाद मिश्र, नवहिन्द प्रकाशन, हैदराबाद, 1953
2. कविता की नयी संवेदना, पृष्ठ सं. 55, व्यास मणि त्रिपाठी, वाणी प्रकाशन, 2020
3. परिवर्तन जिए, पृष्ठ सं. 43, भवानी प्रसाद मिश्र, प्रतिश्रुति प्रकाशन, कोलकाता, प्रथम संस्करण, 2018
4. परिवर्तन जिए, पृष्ठ सं. 34, भवानी प्रसाद मिश्र, प्रतिश्रुति प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2018
5. परिवर्तन जिए, पृष्ठ सं. 35, भवानी प्रसाद मिश्र, प्रतिश्रुति प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2018
6. परिवर्तन जिए, पृष्ठ सं. 89, भवानी प्रसाद मिश्र, प्रतिश्रुति प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2018
7. परिवर्तन जिए, पृष्ठ सं. 44, भवानी प्रसाद मिश्र, प्रतिश्रुति प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2018
8. बुनी हुई रस्सी, पृष्ठ सं. 66, भवानी प्रसाद मिश्र, प्रतिश्रुति प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2018